

سُورَةُ الصَّفِّ

Surah 61 — As-Saff (The Ranks) · Medinan · 14 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ سَبِّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ

जो चीज़े आसमानों में है और जो चीज़े ज़मीन में हैं (सब) खुदा की तस्बीह करती हैं और वह ग़ालिब हिकमत वाला है

2

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ

ऐ ईमानदारों तुम ऐसी बातें क्यों कहा करते हो जो किया नहीं करते

3

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا ۚ مَا لَا تَفْعَلُونَ

खुदा के नज़दीक ये ग़ज़ब की बात है कि तुम ऐसी बात कहो जो करो नहीं

4

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ ۚ صَفًّا ۖ كَانَهُمْ بُنِينَ ۚ مَرْصُوصًا ۚ

खुदा तो उन लोगों से उलफ़त रखता है जो उसकी राह में इस तरह परा बाँध के लड़ते हैं कि गोया वह सीसा पिलाई हुई दीवारें हैं

5

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ ۚ يَقَوْمِ لِمَ تُؤْذُونَنِي وَقَدْ تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ ۚ
فَلَمَّا زَاغُوا ۚ أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ

और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि भाइयों तुम मुझे क्यों अज़ीयत देते हो हालाँकि तुम तो जानते हो कि मैं तुम्हारे पास खुदा का (भेजा हुआ) रसूल हूँ तो जब वह टेढ़े हुए तो खुदा ने भी उनके दिलों को टेढ़ा ही रहने दिया और खुदा बदकार लोगों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता

6

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَبْنِي إِسْرَءِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ ۖ أَحْمَدُ ۚ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا ۖ هَذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ۚ

और (याद करो) जब मरियम के बेटे ईसा ने कहा ऐ बनी इसराइल मैं तुम्हारे पास खुदा का भेजा हुआ (आया) हूँ (और जो किताब तौरत मेरे सामने मौजूद है उसकी तसदीक करता हूँ और एक पैग़म्बर जिनका नाम अहमद होगा (और) मेरे बाद आएँगे उनकी खुशखबरी सुनाता हूँ जो जब वह (पैग़म्बर अहमद) उनके पास वाज़ेए व रौशन मौजिज़े लेकर आया तो कहने लगे ये तो खुला हुआ जादू है

7

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَىٰ إِلَى الْإِسْلَامِ ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

और जो शरूश इस्लाम की तरफ बुलाया जाए (और) वह कुबूल के बदले उलटा खुदा पर झूठ (तूफान) जोड़े उससे बढ़ कर ज़ालिम और कौन होगा और खुदा ज़ालिम लोगों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता

8

يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا ۖ نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَهِهِمْ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ ۚ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ

ये लोग अपने मुँह से (फूँक मारकर) खुदा के नूर को बुझाना चाहते हैं हालाँकि खुदा अपने नूर को पूरा करके रहेगा अगरचे कुफ़्फ़ार बुरा ही (क्यों न) मानें

9

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ ۖ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ ۚ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۚ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ

वह वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा ताकि उसे और तमाम दीनों पर ग़ालिब करे अगरचे मुशरेकीन बुरा ही (क्यों न) माने

10

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ تَجْرَةٍ ۚ تُنْجِيكُمْ مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۚ

ऐ ईमानदारों क्या मैं नहीं ऐसी तिजारत बता दूँ जो तुमको (आख़ेरत के) दर्दनाक अज़ाब से निजात दे

11

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ ۙ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

(वह ये है कि) खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अपने माल व जान से खुदा की राह में जेहाद करो अगर तुम समझो तो यही तुम्हारे हक में बेहतर है

12

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ ۖ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسْكِنٌ طَيِّبَةً ۚ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

(ऐसा करोगे) तो वह भी इसके ऐवज़ में तुम्हारे गुनाह बरख़्त देगा और तुम्हें उन बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं और पाकीजा मकानात में (जगह देगा) जो जावेदानी बेहिशत में हैं यही तो बड़ी कामयाबी है

13

وَأُخْرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۚ نَصْرٌ ۙ مِنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ ۚ قَرِيبٌ ۚ وَبَشِيرٌ ۙ الْمُؤْمِنِينَ

और एक चीज़ जिसके तुम दिल दादा हो (यानि तुमको) खुदा की तरफ से मदद (मिलेगी और अनक़रीब फतेह (होगी) और (ऐ रसूल) मोमिनीन को खुशख़बरी (इसकी) दे दो

14

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ كُونُوا ۚ أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّ ۚ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ۚ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ ۚ فَأَمَنْتَ طَائِفَةٌ ۚ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَكَفَرَتَ طَائِفَةٌ ۚ فَأَيُّدْنَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ

ऐ ईमानदारों खुदा के मददगार बन जाओ जिस तरह मरियम के बेटे ईसा ने हवारियों से कहा था कि (भला) खुदा की तरफ (बुलाने में) मेरे मददगार कौन लोग हैं तो हवारीन बोल उठे थे कि हम खुदा के अनुसार हैं तो बनी इसराईल में से एक गिरोह (उन पर) ईमान लाया और एक गिरोह काफिर रहा, तो जो लोग ईमान लाए हमने उनको उनके दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद दी तो आखिर वही ग़ालिब रहे